Topic 5 भ्वादिगण लिट् लकार - 1 (B.A Part II)

परोक्षे लिट् ।

भूतानद्यतनपरोक्षार्थवृत्तेर्धातोर्लिट् स्यात् । लस्य तिबादयः

अनद्यतन परोक्ष भूत में वर्तमान धातु से लिट् होता है। यहाँ तिप्तस्झि से लकार के स्थान पर तिप् तस् आदि अठारह आदेश प्राप्त होते हैं। किन्तु अग्रिम सूत्र से इसका बाध हो जाता है।

परस्मैपदानां णलतुसुस्थलथुसणल्वमाः ।

लिटस्तिबादीनां नवानां णलादयः स्युः ।

'भू अ' इति स्थिते ।

लिट् स्थानी परस्मैपद तिप्, तस् आदि के स्थान पर क्रमशः णल्, अतुस् आदि आदेश होते हैं। उदाहरण के लिए 'भू + तिप्' के लिट् की विवक्षा में तिप् के स्थान पर णल् आदेश होता है। 'णल' में णकार और लकार की इत्संज्ञा होने पर उनका लोप होकर केवल अकार ही शेष रह जाता है और इस प्रकार रूप बनता है - 'भू + अ' ।

भुवो वुग् लुङ्लिटोः ।

भुवो वुगागमः स्यात् लुङ्लिटोरचि ।

लिटि धातोरनभ्यासस्य ।

लिटि परे अनभ्यासधात्ववयवस्यैकाचः प्रथमस्य द्वे स्तः, आदिभूतादचः परस्य तु द्वितीयस्य ।

भूव् भूव् अ' इति स्थिते ।

लिट् परे होने पर अभ्यास-रहित धातु के विषय में दो कार्य होते हैं -

अनेकाच् हलादि धातु के प्रथम एकाच् और अनेकाच् अजादि धातु के द्वितीय एकाच् को द्वित्व होता है।

सम्पूर्ण एकाच् धातु को द्वित्व होता है।

P.T.O

पूर्वोऽभ्यासः ।

अत्र ये द्वे विहिते, तयोः पूर्वोऽभ्याससंज्ञः स्यात्।

जहाँ एकाचो द्वे 'अजादेः' – ० के अधिकार में द्वित्व करके दो रूप बनाये गये हो, वहाँ पूर्व रूप 'अभ्यास' कहलाता है। उदाहरण हेतु 'भुव् भुव् अ' में 'एर्वसूत्र' से 'भुव्' का द्वित्व हुआ है अतः प्रकृत सूत्र से यहाँ प्रथम 'भुव्' की अभ्यास संज्ञा होती है।

हलादिः शेषः ।

अभ्यासस्यादिर्हल् शिष्यते, अन्ये हलो लुप्यन्ते । इति वलोपे।

'अभ्यास' का आदि हल् शेष रह जाता है। अर्थात् अभ्यास के प्रारंभिक व्यंजन को छोड़कर अन्य सभी व्यंजनों का लोप हो जाता है उदाहरण के लिए 'भुव् भुव् अ' में प्रथम 'भुव्' अभ्यास-संज्ञक है। अतः उसके आदि हल् भकार को छोड़कर अन्य हल् - वकार का लोप हो जाता है और रूप बनता है – 'भु भुव् अ'